अध्याय 21

याजकों से सम्बन्धित नियम

इस्राएल के याजकों को संबोधित किए गए दो अध्यायों में से, अध्याय 21 सबसे पहले याजकों को संबोधित करता है। यदि इस पुस्तक के किसी भी भाग को "याजकों के लिए हस्तपुस्तिका" शीर्षक देने की आवश्यकता है तो यही है। यह अध्याय जब कोई मर जाता है तो उस परिस्थिति में याजकों के याजकीय व्यवहार, याजकों का व्यक्तिगत् भेष, याजकों का विवाह व पारिवारिक जीवन संबंधी नियम, और व्यक्तिगत् अवगुण जो उसे याजक की क्षमतानुसार उसकी दैनिक गतिविधि से रोकती है, के साथ आचरण करता है। अगला अध्याय याजकों को दिए जाने वाले भेंट के भाग से संबंधित है और उसके साथ ही जब वे लोगों से भेंट स्वीकार करते थे तो उन्हें किन-किन बातों से सावधान रहना चाहिए था, के बारे में नियम बताता है।

याजकों को इन बातों का ध्यान रखने का आदेश क्यों दिया गया था? क्योंकि वे पवित्र परमेश्वर से उसके पवित्र लोगों की ओर से मध्यस्थता करते थे। इसलिए, वे स्वयं पवित्र थे; और जो कार्य वे करते थे वह इस्राएल की पवित्रता को संरक्षित रखने के लिए अनिवार्य था। इसलिए यह आवश्यक था कि उनको अपनी भिन्नता बनाए रखना चाहिए था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लैव्यव्यवस्था 21 और 22 की विधियां निर्धारित की गई थी।

कुछ मायनों में, साधारण लोगों से याजकों का स्थान अधिक सम्मानीय था। यह दर्शाता है कि यद्यपि इस्राएल पवित्र था, याजकों की पवित्रता की तुलना अन्य लोगों से अधिक थी।[1] उनके पवित्र होने की मांग उनके अतिरिक्त प्रतिबंध के साथ जीवन जीने का नियम ठहराता है।

याजकों के लिए नियम (21:1-9)

[1]फ़िर यहोवा ने मूसा से कहा, "हारून के पुत्र जो याजक हैं उनसे कह कि तुम्हारे लोगों में से कोई भी मरे, तो उसके कारण तुम में से कोई अपने को अशुद्ध न करे; [2]अपने निकट कुटुम्बियों, अर्थात् अपनी माता, या पिता, या बेटे, या बेटी, या भाई के लिये, [3]या अपनी कुँवारी बहिन जिसका विवाह न हुआ हो, जिनका निकट का सम्बन्ध है; उनके लिये वह अपने को अशुद्ध कर सकता है। [4]पर याजक होने के नाते वह अपने लोगों में प्रधान है, इसलिये वह अपने को ऐसा अशुद्ध न करे कि अपवित्र हो जाए। [5]वे न तो अपने सिर मुँड़ाएँ, और न अपने गाल के बालों

को मुँड़ाएँ, और न अपने शरीर चीरें। 6वे अपने परमेश्वर के लिये पवित्र बने रहें, और अपने परमेश्वर का नाम अपवित्र न करें; क्योंकि वे यहोवा के हव्य को जो उनके परमेश्वर का भोजन है, चढ़ाया करते हैं; इस कारण वे पवित्र बने रहें। 7वे वेश्या या भ्रष्टा से विवाह न करें, और न त्यागी हुई से विवाह करें; क्योंकि याजक अपने परमेश्वर के लिये पवित्र होता है। 8इसलिये तू याजक को पवित्र जानना, क्योंकि वह तुम्हारे परमेश्वर का भोजन चढ़ाया करता है; इसलिये वह तेरी दृष्टि में पवित्र ठहरे; क्योंकि मैं यहोवा, जो तुम को पवित्र करता हूँ, पवित्र हूँ। 9और यदि याजक की बेटी वेश्या बनकर अपने आप को अपवित्र करे, तो वह अपने पिता को अपवित्र ठहराती है; वह आग में जलाई जाए।"

इस अध्याय का निर्देश उन नियमों के साथ प्रारंभ होता है जो सभी याजकों के लिए है।

आयतें 1-4. जैसे लैव्यव्यवस्था में सभी विधियां पाई जाती हैं वैसे ही परमेश्वर ने इन विधियों को **मूसा** को दिया। इसमें केवल इतनी भिन्नता है कि यह सभी इस्राएलियों पर लागू नहीं होता है बल्कि **हारून के पुत्र जो याजक हैं**, पर ही लागू होता था।[2] फ़िर भी, यह स्पष्ट है कि सभी परमेश्वर के लोगों को व्यवस्था सुनना और पढ़ना था - यहाँ तक कि यह उनको भी करना था जो याजक नहीं थे।

मरे हुओं के लिए विलाप करना। याजकों के लिए जो पहली बात प्रतिबंधित थी वह यह है कि उन्हें **मरे** हुओं के कारण अपने को **अशुद्ध** नहीं करना था (21:1)। इस संदर्भ में अपने आपको "अशुद्ध" करने का तात्पर्य मृत देह को छूना था।

याजक को मृत देह छूने के लिए मना किया गया था। इसके साथ ही, उसको अन्य लोगों के समान मित्रों और परिचितों के अंतिम संस्कार में नहीं जाना था और न ही शोक प्रकट करना था। जब किसी का देहांत हो जाता था तो लोग अपने वस्त्र फाड़ते थे और अपने सिरों पर राख डालते थे, लेकिन याजकों को ऐसा नहीं करना था।

फ़िर भी 21:2, 3 इस नियम का अपवाद है। विधि, याजक को **अपने निकटतम संबंधी, माता, पिता, पुत्र, पुत्री, भाई और कुंवारी बहिन** की मृत्यु पर विलाप करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। उसकी "कुंवारी बहिन" उसके "अविवाहित बहिन" के संदर्भ में प्रयोग किया गया है। यदि वह विवाहित होती तो उसका अंतिम संस्कार और दफ़नाने की ज़िम्मेदारी उसके पति की होती (और वह उससे और उसके परिवार से संबंध रखती)। चूंकि वह अविवाहित थी, तब याजक (संभवतः उसके माता-पिता के संग) को उसके अंतिम संस्कार की ज़िम्मेदारी निभानी थी। यद्यपि याजक की पत्नी निकटतम संबंधियों में सूचीबद्ध नहीं की गई है, लेकिन यह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि उसके मृत्यु पर याजक को शोक मनाने की अनुमति थी। गॉर्डन जे. वैनहैम के अनुसार, "चूँकि वे एक देह हैं, तो व्यवस्था यह निश्चित करती है कि वह उसके लिए अपने आपको अशुद्ध कर सकता था।"[3]

21:4 का इब्रानी शब्द अस्पष्ट है।[4] कुछ लोगों ने इस आयत को इस प्रकार समझा: "एक पति के रूप में वह अपने पत्नी, सास, बहू की मृत्यु पर उनके दफ़नाने

में भाग लेकर अपने आपको अशुद्ध नहीं करेगा।" सी. एफ. कील और एफ. डेलित्ज ने इस व्याख्या का इनकार किया। उन्होंने लिखा,

> सास और बहू का अनुचित परिचय कराने के अलावा, हमारे पास पत्नी की मृत्यु पर अशुद्ध ठहरने के विचारों को रोकने का पर्याप्त [प्रमाण] है, बल्कि [आयत] 2 में पत्नी तो "उसके निकटतम संबंधियों" में से एक है।[5]

विभिन्न अनुवादों के कारण इस आयत की जटिलता स्पष्ट है। NASB में इसका इस प्रकार अनुवाद किया गया है **"वह अपने लोगों के बीच विवाह करके अपने आपको अशुद्ध नहीं करेगा,"**; NRSV इस प्रकार अनुवाद करता है "वह एक पति के रूप में अपने लोगों के बीच अपने आपको अशुद्ध नहीं करेगा।" NAB अनुवाद के अनुसार, "एक बहिन के लिए जो अपने परिवार से बाहर ब्याही गई है, के लिए वह अपने आपको अशुद्ध न करे"; और NIV कहता है, "वह विवाह करके उन लोगों से जो उससे संबंधित है, अपने आपको अशुद्ध न करे।" संभवतः सर्वोत्तम अनुवाद आर. के. हैरीसन का हैः "वह अपने आपको, लोगों के बीच अगुआ होने के कारण अशुद्ध न करे, इस प्रकार अपने आपको अपवित्र करे।"[6] सामान्य विचारधारा यह है कि चूंकि याजक अपने लोगों का अगुआ था, तो उसको अपने निकटतम सगे संबंधियों के अलावा दूसरों के लिए शोक करके अपने आपको अशुद्ध नहीं करना था। ऐसा करने से वह **अपने आपको अपवित्र** करता। चूंकि यह उसको अपने कार्य पूरा करने के लिए असम्भव सी स्थिति उत्पन्न करता था, जिस कारण से सभी लोग प्रभावित होते थे।

आयत 5. *व्यक्तिगत रंगरूप।* **सिर के बाल मुँड़ाना**, **गाल के बाल मुँड़ाना, और शरीर चीरना**, लगभग मूर्तिपूजकों की परंपरा से संबंधित है जिसे इस्राएलियों को टालना चाहिए था। संभवतः, ये कुछ ऐसी परंपराएं थीं जो गैर इस्राएली लोग शोक मनाते समय अपनाते थे। आर. लैयर्ड हैरिस के अनुसार, "बाल और अनत की उगारीतिक कहानी में, बाल देवता मारा जाता है और दूसरे देवता, अपने के लिए मित्र, गाल और ठोढ़ी चीरते हैं और बांह की कलाई, छाती और पीठ चीर फाड़ करते हैं।"[7] यह अनुमान लगाया जा सकता है कि देवताओं के बारे में ये कहानियाँ उन लोगों के धार्मिक अभ्यासों को प्रतिबिंब करते हैं जिन्होंने ये कहानियाँ लिखीं थीं, यह प्रमाणित है कि शोक करने वाले मूर्तिपूजक लोग पारंपरिक रूप से अपने आपको घायल करते थे।

आयत 6. *इन नियमों का प्रथम कारणः परमेश्वर की पवित्रता।* याजकों को ये निर्देश क्यों मानने चाहिए थे? आयत 6 इस प्रश्न का उत्तर यह कहकर देता है कि **वे यहोवा के हव्य को जो उनके परमेश्वर का भोजन है, चढ़ाया करते हैं**। यह भेंट तब **उनके परमेश्वर का भोजन** कहा जाता था। जो भेंट आग के द्वारा जलाया जाता था वह यहोवा के लिए "भोजन" समझा जाता था जो उसे वह प्राप्त करता था व उनको स्वीकार करता था। जहाँ तक दूसरे भेंटों का प्रश्न है, उसका कुछ भाग याजकों का था और यह उनका भोजन था। क्योंकि याजक यह "भोजन" अति पवित्र परमेश्वर के लिए उपलब्ध कराते थे, इसलिए उन्हें अपने आपको **पवित्र** रखना था,

उन्हें यह सुनिश्चित करना था कि जब किसी की मृत्यु हो जाती थी तो उससे (या किसी अन्य माध्यम से) अपने आपको अपवित्र करके परमेश्वर के **नाम** को **अपवित्र** नहीं होने देना था।

आयत 7. *विवाह।* याजक होने के कारण किसी के विवाह करने की विकल्प को भी प्रभावित करता था। यहोवा ने हारून को निर्देशित किया कि याजक किसी ऐसी स्त्री से विवाह नहीं कर सकता था जो **वेश्यावृति के कारण भ्रष्ट हो गई हो** या उस **स्त्री से भी विवाह नहीं कर सकता था जिसे उसके पति ने उसे त्यागा हो**। स्पष्ट रूप से, एक सामान्य याजक एक विधवा से विवाह कर सकता था, लेकिन महायाजक उससे विवाह नहीं कर सकता था; वह एक "कुंवारी" - एक स्त्री जिसका कभी विवाह न हुआ हो, से ही विवाह कर सकता था (21:13, 14)।

आयत 7 की निषेधाज्ञा का विस्तृत विश्लेषण नहीं दिया गया है। प्रथम दृष्टया, एक याजक का वेश्या से विवाह करके और उसके पापमय जीवन शैली के साथ संयोजन करके, उसको अपने आपको अपवित्र करना या अशुद्ध करना जान पड़ता है। दूसरे मामले में, व्यवस्था किसी पुरूष को, यदि उसने अपनी पत्नी में किसी तरह की लज्जा की बात पाई हो तो वह उसे त्यागने की अनुमति देता है (व्यव. 24:1)। सिद्धान्तानुसार, कोई भी स्त्री जिसको "लज्जा" के कारण उसके पति ने त्याग दिया हो; और इस लज्जा के कारण उस याजक को उसने अशुद्ध कर दिया होगा जिसने उससे विवाह किया था।

ऐसा लगता है कि इस व्यवस्था में, इससे पहले इस अध्याय में दी गई विधियों के जैसा, यह रीति रिवाज़ अशुद्धता के बारे में है, न कि नैतिक पाप के बारे में। याजक को किसी वैश्या या त्यागी हुई स्त्री से विवाह नहीं करना था, क्योंकि ऐसा करने से वह अशुद्ध हो जाता। ऐसा यह नैतिक पाप के कारण नहीं होता। फ़िर भी, याजक को इस प्रकार के अशुद्धता से बचकर रहना चाहिए था क्योंकि वह "अपने परमेश्वर के लिए पवित्र" किया गया था।

आयत 8. *इन नियमों का दूसरा कारणः याजक की पवित्रता।* इस आयत **के** संदेश को न केवल याजकों को ही संबोधित किया गया था, बल्कि सम्पूर्ण सभा को संबोधित किया गया था। एरहार्ड एस. गेरस्टनबर्गर ने इसका विश्लेषण इस प्रकार किया है,

> यहाँ उद्देश्यपूर्ण वार्तालाप उत्तम पुरूष एकवचन में सभा को व्यक्तिगत् उपदेश के रूप में दिया गया हैः "तुम उसको पवित्र रखना, चूँकि वह तुम्हारे परमेश्वर का भोजन भेंट करता है।" ... सभा के लोग, जो यहोवा द्वारा पवित्र किए गए हैं, उन्हें अपने याजक का आदर करना चाहिए था और उन्हें अपने याजक की पवित्रता को बढ़ाना चाहिए था।[8]

लोगों को याजकों को **पवित्र करना** चाहिए था क्योंकि वे ही हैं जो **परमेश्वर** को **भोजन** भेंट चढ़ाते थे। चूँकि, याजक उसको होमबलि चढ़ाते थे (21:6 की टिप्पणी देखें), तो सभा के लोगों को उनको **पवित्र** समझना चाहिए था। लोगों को ऐसा इसलिए करना था क्योंकि **यहोवा**, जिसने उन्हें शुद्ध किया था (या पवित्र होने के

लिए अलग किया था), स्वयं **पवित्र** था।

आयत 9. *याजक का परिवार।* याजक की पवित्रता न केवल इससे प्रभावित होती है कि वह किससे विवाह करता है बल्कि यह उसके परिवार में भी प्रतिबिंब होना चाहिए था। यह यहाँ तक लागू होता था कि यदि उसकी **पुत्री** वेश्या बनकर अपने आपको अशुद्ध करती थी तो उसको मार देना चाहिए था। **उसे आग में जलाया जाना चाहिए था**, संभवतः जिसका तात्पर्य यह हुआ कि उसको पथराव करने के पश्चात उसकी मृत देह को जलाना चाहिए था। फ़िर से, इस व्यवस्था का उद्देश्य ऐसा प्रतीत होता है कि यह सुनिश्चित करे कि याजकों को अशुद्धता या अपवित्रता से मुक्त रखा जाए। जिसकी एक पुत्री हो और यदि वह वेश्या बनती है (अंदाज़न वह घर में रहती है) तो उससे परिवार में अशुद्धता का चित्र दृष्टिगोचर होता है।

महायाजक के लिए नियम (21:10-15)

10"जो अपने भाइयों में महायाजक हो, जिसके सिर पर अभिषेक का तेल डाला गया हो, और जिसका पवित्र वस्त्रों को पहिनने के लिये संस्कार हुआ हो वह अपने सिर के बाल बिखरने न दे, और न अपने वस्त्र फाड़े; 11और न वह किसी लोथ के पास जाए, और न अपने पिता या माता के कारण अपने को अशुद्ध करे; 12और वह पवित्रस्थान से बाहर भी न निकले, और न अपने परमेश्वर के पवित्रस्थान को अपवित्र ठहराए; क्योंकि वह अपने परमेश्वर के अभिषेक का तेलरूपी मुकुट धारण; मैं यहोवा हूँ। 13और वह कुँवारी स्त्री से ही विवाह करे। 14जो विधवा, या त्यागी हुई, या भ्रष्ट, या वेश्या हो, ऐसी किसी से वह विवाह न करे, वह अपने ही लोगों के बीच में की किसी कुँवारी कन्या से विवाह करे। 15और वह अपनी संतान को अपने लोगों में अपवित्र न करे; क्योंकि मैं उसका पवित्र करनेवाला यहोवा हूँ।"

याजकों के नियमों में विधियां जोड़ दी गई थी जो केवल महायाजक पर ही लागू होता था।

आयतें 10-12. *मुर्दों के लिए शोक।* इस अनुच्छेद की पहली आयत उस व्यक्ति की पहचान करता है जिस पर ये नियम लागू होते हैं: **अपने भाइयों में महायाजक**, जिसका अभिषिक्त किया गया है, जिसका पवित्र **वस्त्रों** को पहनने के लिए संस्कार हुआ हो (21:10)। स्पष्टतया, यहोवा महायाजक के बारे में बात कर रहा था, जिसके वस्त्र के बारे में निर्गमन 28 में विस्तृत विश्लेषण पाया जाता है। अन्य याजकों के समान, दूसरे के मृत्यु पर उसको शोक नहीं करना चाहिए था और **उसे लोथ के पास जाने के लिए** वर्जित किया गया था (21:11)। यहाँ तक कि उसके लिए शोक करना और भी कठोर कर दिया गया था। सिर के बाल बिखरने न दे या अपने वस्त्र न फाड़े का यह आशय है मरे हुए व्यक्ति के लिए विलाप करते समय वह अपना वस्त्र न उतारे (21:10)।

इससे बढ़कर, यह अपवाद कि याजक अपने निकटतम संबंधी के लिए विलाप

कर सकता था, महायाजक को ऐसा करने की अनुमति नहीं था। वह **अपने पिता या माता के लिए भी** शोक नहीं कर सकता (21:11) - या, संभवतः, कोई भी जो उसका सगा संबंधी है (उसके पत्नी को मिलाकर)। व्यवस्था यह स्पष्ट करता है कि वह **पवित्रस्थान से बाहर न निकले** या फ़िर **परमेश्वर के पवित्रस्थान को अपवित्र ठहराए** (21:12)। इस संदर्भ के दृष्टिकोण से, यह विधि संभवतः इस प्रकार कहता है, जब वह पवित्रस्थान के कार्य में व्यस्त हो तो उस समय उसको पवित्रस्थान नहीं छोड़ना चाहिए था चाहे उस समय उसका मित्र या परिवार के सदस्य का अंतिम संस्कार ही क्यों न हो। न ही उसको शोक या दुःख व्यक्त करके पवित्रस्थान को अशुद्ध करना चाहिए था।

आयतें 13-15. *विवाह।* अन्य याजकों की तुलना में महायजक के विवाह के नियम भी बड़े कठोर थे। महायाजक को केवल **कुंवारी स्त्री से ही विवाह** करना चाहिए था, और वह **उसके बीच की ही होनी** चाहिए थी। दूसरे शब्दों में, वह केवल उसी स्त्री से विवाह कर सकता था जो पहले कभी ब्याही न गई हो और जो इस्राएली ही हो। इसलिए, वह किसी **विधवा**, **त्यागी हुई स्त्री, जिसने वेश्या बनकर अपने को अशुद्ध किया हो**, या गैर इस्राएली से विवाह नहीं कर सकता था (21:13, 14)। यही बात उस याजक को त्यागी हुई स्त्री या वेश्या से विवाह करने से रोकती थी, जिसने महायाजक बनने के लिए निवेदन किया होः उसको भी किसी भी प्रकार के अशुद्धता से बचना चाहिए था।

उसे विधवा से विवाह करने की अनुमति क्यों नहीं थी? विधवा से विवाह करने में कुछ भी पापमय या अशुद्धता नहीं जुड़ी थी। टीकाकारों के अनुसार इस प्रश्न का उत्तर यह है कि महायाजक का एक विधवा से विवाह करने की पाबंदी का संबंध उसके वंशागत स्थिति के कारण है। महायाजक का पुत्र ही अगला महायाजक बनता है। यदि महायाजक ने एक विधवा से विवाह किया, तो ऐसा हो सकता है कि उस स्त्री के पिछली विवाह से उत्पन्न पुत्र अगला महायाजक बनने का प्रयास कर सकता था - और उसका यह मतलब होता कि "हारून के पुत्र" को छोड़कर कोई अन्य महायाजक बनता। ऐसी परिस्थिति से बचने के लिए, महायाजक को किसी विधवा से विवाह नहीं करना चाहिए था।

इस विचारधारा का समर्थन 21:15 से किया जा सकता था, जो इस व्यवस्था के दिए जाने का कारण बताता हैः **वह अपनी संतान** [या बीज] **को अपने लोगों में अपवित्र न करे।** उसके "संतान" को "अपवित्र" करने का एक कारण यह हो सकता है कि वह व्यक्ति महायाजक बने जो हारून के वंश का न हो।

कुछ भी अर्थ क्यों न हो, परमेश्वर ने व्यवस्था पर अपनी संस्तुति यह घोषणा करके दी कि वह **यहोवा** था जिसने महायाजक को शुद्ध किया था। इस कारण, महायाजक से संबंधित विधियां को गम्भीरता से लिया जाना चाहिए था।

दोष जो याजक को सेवा से अयोग्य ठहराता है (21:16-24)

16फ़िर यहोवा ने मूसा से कहा, 17"हारून से कह कि तेरे वंश की पीढ़ी पीढ़ी

में जिस किसी के कोई भी दोष हो वह अपने परमेश्वर का भोजन चढ़ाने के लिये समीप न आए। 18कोई क्यों न हो जिस में दोष हो वह समीप न आए, चाहे वह अंधा हो, चाहे लंगड़ा, चाहे नकचपटा हो, चाहे उसके कुछ अधिक अंग हों, 19या उसका पाँव, या हाथ टूटा हो, 20या वह कुबड़ा, या बौना हो, या उसकी आँख में दोष हो, या उस मनुष्य के चाईं या खुजली हो, या उसके अंड पिचके हों; 21हारून याजक के वंश में से जिस किसी में कोई भी दोष हो वह यहोवा के हव्य चढ़ाने के लिये समीप न आए; वह जो दोषयुक्त है कभी भी अपने परमेश्वर का भोजन चढ़ाने के लिये समीप न आए। 22वह अपने परमेश्वर के पवित्र और परमपवित्र दोनों प्रकार के भोजन को खाए, 23परन्तु उसके दोष के कारण वह न तो बीचवाले परदे के भीतर आए और न वेदी के समीप, जिससे ऐसा न हो कि वह मेरे पवित्रस्थानों को अपवित्र करे; क्योंकि मैं उनका पवित्र करनेवाला यहोवा हूँ।" 24इसलिये मूसा ने हारून और उसके पुत्रों को तथा सब इस्राएलियों को ये बातें कह सुनाईं।

इस अध्याय का अंतिम अनुभाग उन दोषों की सूची जारी करता है जो हारून के संतानों को याजक का कार्य करने से रोकती है। यहोवा यह चाहता था जो याजक वेदी पर सेवा करते थे वे भी ऐसे ही "दोषरहित" हों जिस प्रकार वे दोषरहित पशु भेंट चढ़ाते थे।

आयतें 16, 17. दोषरहित याजकपद के उद्देश्य की पूर्ति हेतु, **यहोवा** ने एक सिद्धांत बतायाः हारून के लिए उसका संदेश यह था कि उसका कोई भी **वंश** (या बीज) - अर्थात याजकीय वंश का कोई भी व्यक्ति - जिसमें कोई **दोष** हो वह परमेश्वर का **भोजन चढ़ाने के लिए** समीप न आए।

आयतें 18-21. यहोवा ने कुछ दोषों की सूची जारी की जो याजक को पवित्रस्थान में सेवा करने से अयोग्य ठहराती थी। जैसे NASB में पाया जाता है, इस प्रकार के लेवियों को पवित्रस्थान में सेवा करने से वर्जित किया गया थाः **अंधे, लंगड़े, जो नकचपटा हो, जिसके अधिक अंग हों, जिसका हाथ-पांव टूटा हो, कुबड़ा, बौना, जिसकी आंखों में दोष हो, या जिसको खुजली व चाईं हो, या जिसके अण्ड कुचले गए हों** (21:18-20)।

इस अनुच्छेद में प्रयोग किए गए कुछ इब्रानी शब्दों को समझना कठीन है। इस बात को दूसरे अनुवादों से तुलना करके प्रमाणित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, CEV में इसका इस प्रकार अनुवाद किया गया हैः

> "तेरी कोई भी संतान कभी भी मेरे याजक की सेवकाई नहीं कर पाएगा यदि वह अंधा या लंगड़ा हो, यदि वह नकचपटा हो, *यदि एक पैर दूसरे से छोटा हो*, यदि उसका एक पैर या एक हाथ *सूखा* हो, यदि वह कुबड़ा या बौना हो, यदि उसके आँख में दोष हो या *उसको खुजली हो*, या फ़िर उसके अण्ड कुचले गए हों" (बल दिया गया है)।

फ़िर भी, इस पाठ का संदेश समझने के लिए हर एक दोष को ठीक-ठीक

पहचानने की आवश्यकता नहीं है। यहोवा याजकों के प्रति जो उसको भेंट चढ़ाते थे, यह चाहता था कि वे शारीरिक रूप से ठीक हों (21:21)।

इन दोषों के बारे में दो बातें बतानी आवश्यक है। प्रथम, संभवतः वे प्रतिनिधि होने के लिए नियुक्त किए गए थे। यदि किसी में कुछ दोष पाया जाता था जो इस अनुच्छेद की सूची में सूचीबद्ध नहीं किया गया है लेकिन वह स्पष्ट दीखता था, तो यह उसको पवित्रस्थान में सेवा करने से अयोग्य ठहराता था। 21:17 में पाये जाने वाले सामान्य नियम के अंतर्गत् वह इस सेवा से वंचित किया जाएगा। द्वितीय, इसमें सूचीबद्ध कुछ दोष अस्थाई हो सकते थे जैसे "खुजली," "खुरण्ड," या "टूटे पैर" या "हाथ।" अस्थाई दोष की स्थिति में यह माना जा सकता है कि याजक को सेवा के लिए तब तक ही बाधित किया जा सकता था जब तक कि दोष बना रहता था।

आयतें 22-24. यहोवा विस्तारपूर्क यह विश्लेषण जारी रखता है कि दोषयुक्त याजक क्या सकता था और क्या नहीं कर सकता था।

वह **अपने परमेश्वर का भोजन**, जिसका वर्गीकरण **पवित्र** और **अति पवित्र** भोजन के रूप में किया गया है, खा सकता था (21:22)। दोषयुक्त याजक को याजकपद की सुविधा में भाग लेने से वंचित नहीं किया गया था। यदि वह, अन्य सभी याजकों के साथ, यहोवा के लोगों द्वारा लाए गए भेंट का भोजन खा सकता था, तो इस बात की भी संभावना थी कि उसको अन्य याजकीय लाभ भी प्राप्त होता होगा। उदाहरण के लिए, इस्राएलियों द्वारा भेंट की जाने वाली दसवांश का भाग भी उसको मिलता होगा और जो प्रथम फल वे यहोवा (और याजकों) के लिए लाते थे उसका लाभ भी उसको मिलता होगा।

वह **बीच वाले परदे के पास नहीं जा** सकता था (अर्थात् वह पवित्र स्थान में नहीं प्रवेश कर सकता था), और वह **वेदी के निकट भी नहीं आ सकता था** (21:23)। चूँकि याजकों का कार्य पवित्रस्थान में प्रवेश करना और वेदी पर बलिदान करना था, तो इस दृष्टिकोण से वह याजकों के प्राथमिक कार्य में भाग नहीं ले सकता था।

इन नियमों का आधार यह है कि इस्राएल का परमेश्वर **यहोवा** था (21:23)। उसी ने ही याजकों को शुद्ध किया था। जिस तरह यह अध्याय प्रारंभ होता है उसी तरह यह ऐसा कहते हुए कि यहोवा ने यह संदेश दिया है, समाप्त भी होता है; लेकिन इन नियमों के अंतिम श्रोताओं में भेद किया गया है। इस अध्याय के आरंभ में "यहोवा" ने कहा कि यह संदेश "याजकों" को दिया जाना चाहिए (21:1)। अंत में, पाठ कहता है कि **मूसा** ने **हारून और उसके पुत्रों** को तथा **कुल इस्राएलियों** को यह बातें कह सुनाईं (21:24)। यद्यपि विशेषकर ये नियम याजकों पर लागू होता था, लेकिन कुल इस्राएल को ये बातें समझनी चाहिए थी।

अनुप्रयोग

परमेश्वर पक्षपात नहीं करता है दोषयुक्त लोगों के विरूद्ध (21:16-24)

आज 21:16-24 में "दोष" से संबंधित वर्णित नियम, जो एक याजक को याजकीय सेवा से अयोग्य घोषित करता है, अजीब सा जान पड़ता है। इस युग में, एक व्यक्ति के दोष के बारे में ध्यान आकर्षित करना, राजनैतिक और सामाजिक रूप से आक्रमक जान पड़ता है।

आज के कई पाठक इस अनुच्छेद से असंतुष्ट होंगे। क्या बाइबल (और परमेश्वर) के आरोप के विरूद्ध कुछ कहा जा सकता है कि यह (वह) दोषयुक्त या व्यक्तिगत् समस्याओं से ग्रसित लोगों के साथ भेदभाव करता है?

हाँ यह सत्य है कि विश्वासी लोग चाहे वे इसे समझते हैं या नहीं, परमेश्वर के वचन को सत्य मानते हैं। वह यह भी मानता है कि यदि बाइबल किसी व्यवस्था का कोई कारण नहीं बताती है और यदि टीकाकार इसका अर्थ बताने का प्रयास करते हैं तो यह केवल अनुमान मात्र ही होगा। यह सूचित अनुमान होगा, लेकिन यह केवल अनुमान ही है; इसे बाइबल जो खरी शिक्षा देती है उसके बराबर नहीं समझा जाना चाहिए। फ़िर भी, दोषयुक्त लोगों के प्रति प्रश्न के बारे में, कुछ तथ्यों पर विचार किया जाना चाहिए।

सबसे पहले, लैव्यव्यवस्था की पुस्तक के पूर्वर्ती अध्यायों में अंधे या बहरे का उपहास करने की भर्त्सना की गई है (19:14)। ये लोग उन लोगों में से हैं जिनको प्रेम करने के लिए इस्राएलियों को आज्ञा दी गई थी (19:18)। ये विधियां यह प्रमाणित करती है कि मूसा की व्यवस्था दिव्यांगों के प्रति पक्षपात नहीं करती है।

दूसरी बात, इक्कीसवीं अध्याय में "दोष" से संबंधित नियम केवल याजकों पर ही लागू होता है, सभी इस्राएलियों पर नहीं। जब याजकों के कार्यों पर विचार किया जाता है, तो दोष से संबंधित नियम आवश्यक कार्यात्मक रूप में देखा जाना चाहिए। हवाई जहाज़ उड़ाने से पहले हवाई जहाज़ के चालकों को कुछ शारीरिक प्रशिक्षण उत्तीर्ण करना होता है। क्यों? क्योंकि शारीरिक अभिलक्षण की परीक्षा हवाई जहाज़ को सुरक्षित उड़ाने के लिए आवश्यक है। इसमें ऐसी कोई संभावना नहीं है जिसमें कोई यात्री अंधे हवाई जहाज़ चालक को हवाई जहाज़ न उड़ाने देने के "भेदभाव" की शिकायत करे। हवाई जहाज़ उड़ाने की क्षमता को सीमित करने के नियम पक्षपात नहीं है; वे तो कार्यात्मक आवश्यकताएं हैं।[9] उसी तरह, कुछ शारीरिक निपुर्णता - जिसमें सामर्थ, सहनशक्ति, और अच्छी दृष्टि सम्मिलित है - याजक को अपना कार्य करने के लिए आवश्यक था। मारना, काटना, पशु के खाल उतारना और उन्हें वेदी पर रखना, आग जलाना, अवशेष को ठिकाना लगाना एंव अन्य कठीन शारीरिक कार्य सम्मिलित है। आमतौर पर कहा जाए तो उपरोक्त वर्णित दोष से ग्रसित व्यक्ति के लिए ये सब कार्य करना असंभव था।

तीसरी बात, ये नियम याजक को याजकपद पर सेवकाई करने से या याजक का कार्य करने से रोकती थी।[10] ये नियम यह नहीं कहते हैं कि इस प्रकार से

दोषयुक्त व्यक्ति याजक नहीं हो सकता था; न ही उसको याजक होने के किसी लाभ से वंचित नहीं किया गया था। (जैसे 21:22 इस बात को स्पष्ट करता)। जेम्स एच. हेज ने लिखा,

> याजकीय प्रणाली के अंतर्गत्, हारून के वंश का कोई भी पुरूष, याजकपद के सारे अधिकार प्राप्त करते थे, लेकिन जो शारीरिक दोषयुक्त (आयतें 17-21) था उसे मंदिर [मिलापवाले तम्बू] में कार्य करने से मना किया गया था, यद्यपि वह याजकीय अनुलाभ का भागी था।[11]

एक याजक जिसको शारीरिक दोष है पवित्र स्थान में नहीं जा सकता था, परंतु वह वेदी पर चढ़ाई गई भेंट में से खा सकता था। एक मायने में, कोई भी यह कह सकता था कि यदि किसी याजक को शारीरिक दोष है तब भी उसको उसकी मज़दूरी मिलती थी (इसके अंतर्गत् वह बलिदान की भेंट में से खा सकता था और दसवांश और प्रथम फल प्राप्त कर सकता था)। अयोग्य घोषित किए गए लेवी को याजक के रूप में समर्थन किए जाने का पात्रता प्राप्त था, परंतु वह आमतौर पर याजकों द्वारा किए जाने वाले कार्य नहीं कर सकता था।

चौथी बात, परमेश्वर पवित्रस्थान और इसकी सेवा सर्वोत्तम चाहता था। वाचा की संदूक, चोखा सोना से मढ़ा जाना चाहिए था। "प्रथम फल" खेती का सर्वोत्तम फसल, परमेश्वर को भेंट किया जाना चाहिए था। वेदी पर चढ़ाए जाने वाले अधिकांश भेंट में से परमेश्वर सर्वोत्तम भेंट - "दोषरहित" पशु - भेंट किए जाने की मांग करता है। "अशुद्ध व्यक्ति" को उनके अशुद्धता के दिनों में पवित्रस्थान में जाने की अनुमति नहीं था। महायाजक का वस्त्र इतना आकर्षक था कि कोई भी मनुष्य उसको वैसा नहीं बना सकता था। यह परमेश्वर के लिए आश्चर्य में डालने वाली बात थी कि वह उस याजक को जिसको शारीरिक दोष था, को आराधनालय की आराधना का अगुआई करने की अनुमति देता। जेकब मिलग्रोम ने देखा, "भेंट किए जाने वाले पशु के समान भेंट, चढ़ाने वाले याजक को भी *निर्दोष* होना चाहिए था।"[12]

क्यों परमेश्वर इस प्रकार के मामलों के प्रति इतना चिंतित था? पवित्रस्थान और जो कुछ उससे जुड़ा था - उन याजकों को भी मिलाकर जो इसमें सेवा करते थे - यहोवा और उसके पवित्रता का प्रतिनिधित्व करते थे। सर्वोत्तम से कुछ भी कम अपकृष्ट ईश्वर का चित्र प्रस्तुत करता है। यद्यपि, पवित्रस्थान की सेवा में जब केवल सर्वोत्तम भेंट किया जाता था तो परमेश्वर की उपस्थिति और उसकी पूर्णता प्रतिबिंब होती है और उसके नाम को महिमा मिलेगा!

चूँकि परमेश्वर पूर्णतया पवित्र है तो उसका घर, और जो उसके घर में सेवा करते थे, उनको भी उसकी पवित्रता दिखाना चाहिए था। इसलिए, जिन लोगों में शारीरिक दोष पाया जाता था, यद्यपि वे दूसरों से किसी रीति से अपकृष्ट नहीं थे, परंतु वहाँ पर वे उपयुक्त सेवक नहीं थे। "परमेश्वर की सेवा में असामान्यता का कोई स्थान नहीं था।"[13]

क्या परमेश्वर शारीरिक रंग रूप की चिंता करता है? (21:16-24)

जब शमूएल, परमेश्वर की दिशा निर्देशन के अनुसार, शाऊल का उत्तराधिकारी होने के लिए यिशै के पुत्रों में से एक को राजा का उत्तराधिकारी अभिषेक करने के लिए तैयार था, तो उसने सोचा कि यिशै के जेठा पुत्र एलिआब में उसने राजा के उत्तराधिकारी को ढूँढ लिया है। परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, "न तो उसके रूप पर दृष्टिकर, और न उसके कद की ऊँचाई पर, क्योंकि मैं ने उसे अयोग्य जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है" (1 शमूएल 16:7)। ऐसा प्रतीत होता है कि यह अनुच्छेद यह कहता है, "परमेश्वर को आपके रंग रूप से कोई फ़र्क नहीं पड़ता है!" इस प्रकार का विचार हम में से बहुतों के लिए सांत्वना का कारण ठहरता है!

इसलिए जब हम लैव्यव्यवस्था 21 पढ़ते हैं तो बहुतों को यह झकझोर कर देता है कि परमेश्वर ने कुछ याजकों का इसलिए तिरस्कार कर दिया था क्योंकि वे शारीरिक रूप से दोषयुक्त थे। क्या यह तथ्य रंग रूप से संबंधित परमेश्वर की गैर-पक्षपाती नीति का उल्लंघन है? पहले दिए गए कारण के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर "ना" है। पुराने नियम की परंपरा के अंतर्गत् याजक लोगों का विशेष मामला था। वे परमेश्वर और उसके पवित्रता का प्रतिनिधित्व करते थे; उचित तरीके ऐसा करने के लिए उनको "दोषरहित" होना चाहिए था।

नये नियम में इसके बारे में क्या लिखा है? मसीह की व्यवस्था जिसके आधीन हम जीते हैं क्या वह परमेश्वर हमारे रंग रूप के बारे में क्या सोचता है, इसके बारे में कुछ कहता है? प्राथमिक रूप से, नये नियम की शिक्षा 1 शमूएल में पाए जाने वाली सच्चाई से सहमत है। नये नियम काल में सबसे बड़ी भेदभावपूर्ण समस्या क्षमता या बाहरी रंग रूप पर आधारित नहीं था बल्कि यह राष्ट्रीयता पर आधारित था; यहूदी लोग आमतौर पर अन्य जातियों से सम्पर्क नहीं रखते थे। इस समस्या का समाधान अभिषिक्त लेखकों ने किया है। पौलुस ने कहा, "अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो" (गला. 3:28)। जब परमेश्वर किसी व्यक्ति का उद्धार करता है तो वह संसार में उसकी स्थिति की चिंता नहीं करता है। जब उस व्यक्ति का उद्धार हो चुका होता है, तो वह परमेश्वर की संतान और यीशु का शिष्य बन जाता है! परमेश्वर किसी की वंशावली व रंग रूप की चिंता नहीं करता है। मसीह यीशु में सभी एक हैं।

क्या कोई ऐसी परिस्थिति है जहाँ मसीहियों का रंग रूप चिंता का विषय हो सकता है? हाँ। चूँकि परमेश्वर अपने हर एक जन से एक प्रभावशाली व्यक्ति बनने की अपेक्षा करता है (मत्ती 5:13-16) तो मसीही लोगों को इस बात का ध्यान रखना होगा कि वे दैनिक रूप से दूसरे को कैसे दिखाई देते हैं। यह सत्य है कि "परमेश्वर हृदय देखता है," लेकिन दूसरे लोग मनुष्य के बाहरी रंग रूप देखते हैं और जो वे देखते हैं उसी के आधार पर अपना न्याय सुना देते हैं।

यह जानकर, दूसरे हमारे बारे में क्या सोचते हैं, की चिंता करनी चाहिए? यदि हम दूसरों पर अच्छा प्रभाव जमाना चाहते हैं और दूसरों का प्राण बचाने के लिए चिंतित हैं, तो हमें इस विषय में गहराई से सोचना चाहिए! हाँ, समय-समय पर, स्थान-स्थान पर और एक संस्कृति से दूसरे संस्कृति में भिन्न हो सकता है; इसलिए कोई भी मसीही यह नहीं शिकायत कर सकता है कि हर परिस्थिति में उसको कैसा दीखना चाहिए। इसके साथ ही, हर एक मसीही को अपने रंग रूप, या साज सज्जा के प्रति सावधानी बरतने की आवश्यकता है कि उसके मसीही प्रभाव को बढ़ा या घटा सकता है।

कुछ मायने में, हम कैसे दीखते हैं, के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कर सकते हैं; लेकिन हम सभी को "जो हमारे पास है उससे सर्वोत्तम करने का प्रयास करें" ताकि जिस संसार में हम रहते हैं वहाँ के लोगों पर अच्छा प्रभाव डाल सकें।

समाप्ति नोट्स

[1]रोनॉल्ड ई. क्लेमेंट्स के वक्तव्यनुसार, "यद्यपि लैव्यव्यवस्था की पुस्तक के धर्मविज्ञानानुसार सारा इस्राएल पवित्र है, यह इस बात को मान्यता नहीं देता है कि याजक विशेष रूप से पवित्र हैं और महायाजक उनसे भी अधिक पवित्र है। परिणामस्वरूप इस्राएल के याजकों के परिवार के लिए कठोर नियम ठहराए गए हैं" (रोनॉल्ड ई. क्लेमेंट्स, "लैव्यव्यवस्था," *द ब्राडमैन बाइबल कमेंट्री*, खण्ड 2, *लैव्यव्यवस्था - रूत*, सम्पादक क्लिफ़टन जे. एलेन [नैशविलः ब्राडमैन प्रेस, 1970], 56)। [2]जबकि लेवी का गोत्र "याजकीय गोत्र" के नाम से जाना जाता है, लेकिन लेवी गोत्र में केवल हारून के पुत्र ही याजकीय सेवा कर सकते थे। कोई भी हारून के गोत्र के पुरूष याजक पद की योग्यता स्वतः ही प्राप्त करते थे। [3]गॉर्डन जे. वैनहैम, *द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था*, द न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री ऑन दि ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 290. परमेश्वर का यहेजकेल को उसकी पत्नी की मृत्यु पर शोक न करने के लिए कहना (यहेज. 24:15-27) स्वीकारोक्ति परंपरा के प्रति एक अपवाद था; यह मूकदर्शकों को आश्चर्यचकित करने वाला था ताकि यह कुछ समझने में उनकी सहायता कर सके। [4]यथाशब्द, इब्रानी भाषा में यह इस प्रकार है, "एक अगुआ [या 'पति' या 'स्वामी'] अपने लोगों के बीच अपने आपको अशुद्ध नहीं करेगा, अपने आपको गंदा नहीं करेगा।" [5]सी. एफ. कील और एफ. डेलित्ज, *द पेंटाट्यूक*, खण्ड 2, अनुवादक जेम्स मार्टिन, बिब्लिकल कमेंट्री ऑन दि ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1959), 429. [6]आर. के. हैरीसन, *लैव्यव्यवस्था*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डॉनर्स ग्रूव, इलीनॉयसः इण्टर-वर्सिटी प्रेस, 1980), 209. दूसरे अनुवादों में "न ही वह अपने पिता के निकटतम संबंधियों में विवाहित स्त्रियों के लिए अपने आपको अशुद्ध करे" (REB); "लेकिन वह निकटतम विवाहित महिला संबंधी के लिए अपने आपको अशुद्ध न करे" (NJB); और "अन्यथा अपने लोगों में मुखिया होने के कारण, वह अपने आपको अशुद्ध न करे" (NKJV)। [7]आर. लैयर्ड हैरिस, "लैव्यव्यवस्था," *दि एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री*, खण्ड 2, *उत्पत्ति - गिनती*, सम्पादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1990), 616; उधृत "पोएम्स अबाऊट बाल एण्ड अनत," जेम्स बी. प्रिचार्ड, सम्पादक, *एंसियंट नियर ईस्टर्न टेक्स्ट्स रेलेटिंग टू दि ओल्ड टेस्टामेंट*, तीसरा संस्करण (प्रिंस्टन, न्यू जर्सीः प्रिंस्टन यूनीवर्सिटी प्रेस, 1969), 139. [8]एरहार्ड एस. गेरस्टनबर्गर, *लेवीटीकसः ए कमेंट्री*, अनुवादक डगलस डब्ल्यु. स्टॉट, दि ओल्ड टेस्टामेंट लाइब्रेरी (लुईविलः वेस्टमिंस्टर जॉन नॉक्स प्रेस, 1996), 315. [9]यह उदाहरण मेरी पत्नी शरलोट रॉपर ने सुझाया है। [10]जेम्स ई. स्मिथ के अनुसार, "शारीरिक दोषयुक्त याजक, याजकपद के कई सुविधाओं का आनंद उठाते थे, लेकिन वे आराधना की अगुआपन से अयोग्य घोषित किए गए थे" (जेम्स ई.

स्मिथ, *दि पेंटाट्यूक*, दूसरा संस्करण, ओल्ड टेस्टामेंट सर्वे सीरीज [जॉप्लीन, मीसूरीः कॉलेज प्रेस कम्पनी, 1993], 388)।

[11]जॉन एच. हेस, "लैव्यव्यवस्था," इन *हार्पर्स बाइबल कॉमेंटरी*, एड. जेम्स एल. मेयज (सैन फ्रांसिस्को: हार्पर एण्ड रो, 1988), 176. [12]जेकब मिलग्रोम, "द बुक ऑफ़ लेवीटीकस," *दि इंटरप्रेटर्स वन वोल्यूम कमेंट्री* ऑन *द बाइबल*, सम्पादक चार्ल्स एम. लेमन (नैशविलः अबिंगदन प्रेस, 1971), 80. [13]हेयज, 176.